ॐ

श्री पंचकल्याणक विधान

रचयिता
बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक
श्री जैनोदय विद्या समूह

❑ **कृति** : श्री पंचकल्याणक विधान

❑ **आशीर्वाद** : संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित
आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

❑ **कृतिकार** : बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

❑ **संयोजक** : बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

❑ **संस्करण** : द्वितीय, ११०० प्रतियाँ

❑ **प्रसंग** : १४-१९ जनवरी २०१९ पंचकल्याणक गढ़ाकोटा

❑ **लागत मूल्य** : 20/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

❑ **प्राप्ति स्थान** : बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
94251-28817
सौरभ जैन कडेसरा
70075-38549

❑ **मुद्रक** : विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

बा. ब्र. पुष्पा दीदी रहली, बा.ब्र. सुनीता दीदी पिपरई,
बा.ब्र. हेमलता (बबली) दीदी
स्व. श्री सुभाषचंद-श्रीमती निशा,
सुमित-स्वाति, मार्दव जैन
जैन नगर, लाल घाटी, भोपाल (म.प्र.)

अन्तर्भाव

पाषाण से परमात्मा बनाने की प्रक्रिया का महोत्सव है पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव। जिसमें प्रभु की भक्ति-पूजन का विशेष रूप से आयोजन किया जाता है। चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिदिन के कल्याण की पूजन करने हेतु यह कृति अत्यंत सरल भाषा में संतशिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक, कविहृदय शिष्य बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज के द्वारा तैयार की गई है। जिसका संकलन एवं संयोजन करके अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। तीर्थंकरों की पूजन में पंचकल्याणक अर्घ्य का होना आवश्यक होता है क्योंकि वे पंचकल्याणक से सहित होते हैं। बिना इन अर्घ्यों के वह पूजा अधूरी सी प्रतीत होती है। जरूरी नहीं यह विधान प्रतिष्ठा महोत्सव में ही किया जाये इसको व्रत आदि के अवसर पर या भगवान के कल्याणक के अवसर पर भी किया जा सकता है। इस कृति का यह द्वितीय संस्करण है जिसके माध्यम से सभी भक्तगण अत्यंत भाव-विभोर होकर प्रभु की भक्ति-विधान एवं गुणगाान तथा स्तुति कर पुण्यार्जन कर सकें।

मुनिश्री की लगभग ७० कृतियाँ हैं जिनमें विधान-पूजा, कहानी, आरती, भजन, नाटक, मुक्तक, कवितायें आदि सम्मिलित हैं। आपके विधानों में चारों अनुयोगों के विषय समावेश हैं। विधान करते समय ऐसा लगता है कि हम भगवान की भक्ति करने के साथ-साथ स्वाध्याय कर रहे हों। ऐसा प्रतीत होता है कि जो बातें यहाँ कही गईं हैं वे सब बातें हमारे आस-पास के वातावरण में समाविष्ट हैं। सिद्धान्त की बात को भी बड़ी ही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। चौबीस तीर्थंकरों की पूजाओं में जयमाला यद्यपि थोड़ी बड़ी जरूर लगेंगी लेकिन उनमें तीर्थंकरों के जीवन-चारित्र को समाहित करने का प्रयास किया गया है। लोगों का यह कहना है कि इस जिनवाणी से पूजन करते समय ऐसा लगता है कि हम अपनी ही बात को भगवान से कह रहे हैं तथा अपनत्व भाव झलकता है। बीच-बीच में पूज्य आचार्यश्री के विचारों को हाईको के रूप में प्रस्तुत किया गया है। तथा श्रावकों के पाठ करने हेतु कुछ आवश्यक सूत्र-पाठों को भी रखा गया है।

जिन्होंने इस कृति के प्रचार-प्रसार में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से किसी भी माध्यम से सहयोग किया है वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। इस कृति के माध्यम से सभी लाभ लें इसी भावना के साथ गुरुदेव और मुनि श्री के चरणों में नमन...।

बा. ब्र. संजय, मुरैना

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमन्त्रं मंगलं जिनशासनं॥

मंगलाष्टक स्तोत्र

[अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्॥]

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत-रत्नप्रभा-,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाऽम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥१॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति - श्री - नगराऽधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥२॥

नाभेयादि - जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोतरा विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥३॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥४॥

ये सर्वौषधिऋद्धयः सुतपसो वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशला येऽष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥५॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥६॥
ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥७॥
यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥८॥
इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्चसुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि॥
[विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धिप्रदं॥
ज्ञानध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरं॥]

(पुष्पांजलिं...)

===

नित्य नियम पूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रूल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो , निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सो, तो न मिटैं उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करनतें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(नौ बार णमोकार...)

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि,
साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥ १॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥ २॥
अपराजित-मन्त्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु , प्रथमं मंगलं मतः॥ ३॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्॥ ४॥
अर्हं-मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥ ५॥

कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥ ६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥ ७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिन गृहे जिन कल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन इष्ट(नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भक्तामर स्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे मुनिराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,

जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥ १॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥ २॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥ ३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥ ४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥ ५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।

श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १॥
कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥
प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥
जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥
अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥
सकाम रूपित्व वशित्व मैश्यं, प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ८॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ९॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतो ऽप्य मृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १०॥

॥ इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परिपुष्पांजलिं क्षिपामि॥

श्री नवदेवता पूजन

स्थापना (हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनायें गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गये जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमायें जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर.....। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः.....। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्.....। (पुष्पांजलिं....)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलायें।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लायें॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं.....।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसायें, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

हम जिनको गले लगायें, वे गला हमारा घोंटें।

वे हमको खूब रुलायें, हम जिनके आंसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि.....।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटायी।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

गोदी में जिन्हें खिलायें, हम काजल जिन्हें लगायें।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखायें॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.....।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिरायें, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

बदनाम हुये हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबायें।
फिर देकर दाग जलायें, हम जिन पर प्राण लुटायें॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वंदन हमारे॥१॥

परम् पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥

दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुये पूर्ण सपने॥३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानंद हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शांति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥

जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥

यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥

जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥८॥

हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्ति रमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पाञ्जलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

आचार्यश्री विद्यासागरजी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमायें फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

सिद्धभक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडायरा सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सदा सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

विधान प्रारंभ

गर्भकल्याणक पूजन

स्थापना (हरीगीतिका)

तीर्थंकरों का मातृ के जब, गर्भ में हो अवतरण।
वो गर्भकल्याणक करें सुर, पूज कर प्रभु के चरण॥
तब राज आँगन सज सुखी हो, भक्त श्रद्धा से सजें।
मन वेदिका पर तुम वसो हम, गर्भ कल्याणक भजें॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

प्रासुक जल भक्त चढ़ायें, शुद्धातम पर ललचायें।
कल्याणक गर्भ मनाय, हम करने नमोऽस्तु आये॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं...।

प्रभु समता धरके महकें, हम चंदन ले-कर चहकें
कल्याणक गर्भ मनाये, हम करने नमोऽस्तु आये॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं...।

तुम हो अक्षय अविनाशी, हम पूजन के अभिलाषी
कल्याणक गर्भ मनाये, हम करने नमोऽस्तु आये॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतान्...।

प्रभु आतम कली खिलाये, हम पंखुड़ि बनने आये
कल्याणक गर्भ मनाये, हम करने नमोऽस्तु आये॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पाणि...।

निज भोज्य बनाओ खाओ, प्रभु थोड़ा हमें चखाओ
कल्याणक गर्भ मनाये, हम करने नमोऽस्तु आये॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं...।

हम बने दीप घी ज्योति, तो जिन सम चमकें मोती
कल्याणक गर्भ मनाये, हम करने नमोऽस्तु आये॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं...।

कर्मों को धूल चटायी, सो मुक्ति हार ले आयी।
कल्याणक गर्भ मनाये, हम करने नमोऽस्तु आये॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं...।

जड़ की जड़ तुमने काटी, फल चढ़े मोक्ष की घाटी।
कल्याणक गर्भ मनाये, हम करने नमोऽस्तु आये॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं...।

अंतिम है गर्भ तुम्हारा, तुम सम हो अर्घ्य हमारा।
कल्याणक गर्भ मनाये, हम करने नमोऽस्तु आये॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (सखी)

सर्वार्थसिद्धि से चयकर, आषाढ़ कृष्ण दूजा पर ।
मरु माँ के गर्भ वसंता, जय आदिनाथ भगवंता ॥१॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तजकर सुर विजय अनुत्तर, फिर जेठ अमावस पाकर।
विजया माँ गर्भ वसंता, जय अजितनाथ भगवंता ॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां गर्भकल्याणकमण्डित श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज गैवेयक के आसन, जब शुक्ल अष्टमी फाल्गुन।
सुसेना गर्भ वसंता, जय हो शंभव भगवंता॥३॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री शंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज विजय अनुत्तर सृष्टि, वैशाख शुक्ल की षष्ठी।
सिद्धार्था गर्भ वसंता, जय अभिनंदन भगवंता॥४॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री अभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण सुदि दूजा आई, माँ गर्भ मंगला पाई।
तज स्वर्ग विमान जयंता, जय सुमतिनाथ भगवंता ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठ माघ कृष्ण की प्यारी, माँ गर्भ सुसीमा धारी।
तज ग्रैविक गर्भ वसंता, जय पद्मप्रभु भगवंता ॥६॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज ग्रैवेयक की माटी, छठ भाद्र शुक्ल जब आती।
माँ पृथ्वी गर्भ वसंता, जय सुपार्श्व प्रभु भगवंता ॥७॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वदि चैत्र पंचमी प्यारी, माँ गर्भ लक्षणा धारी।
दे सपने आए जिनंदा, जय चंद्रप्रभु भगवंता ॥८॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवमी सुदि फाल्गुन आयी, माँ रमा गर्भ सुख पायी।
अपराजित स्वर्ग तजंता, जय सुविधिनाथ भगवंता ॥९॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वदि चैत्र अष्टमी पाये, अच्युत से च्युत हो आये।
फिर पाये गर्भ सुनंदा, जय हो शीतल भगवंता ॥१०॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की षष्ठी, पुष्पोत्तर तज हुई वृष्टि।
विमला के गर्भ वसंता, जय श्रेयांसनाथ भगवंता ॥११॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठ कृष्ण रही आषाढ़ी, तज महाशुक्र की गाड़ी ।
विजया के गर्भ वसंता, जय वासुपूज्य भगवंता ॥१२॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(चौपाई)

त्याग शतार कंपिला आये, ज्येष्ठ कृष्ण जब दसमी पाये।
जय श्यामा के गर्भ वसंता, जय हो विमलानाथ भगवंता ॥१३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

एकम कार्तिक कृष्ण महाना, पुष्पोत्तर का तजे विमाना।
सर्वयशा के गर्भ वसंता, जय हो अनंतनाथ भगवंता ॥१४॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भकल्याणकमण्डित श्री अनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज सर्वार्थसिद्धि की तृष्णा, त्रयोदशी वैशाखी कृष्णा।
गर्भ सुव्रता माँ के वसंता, जय हो धर्मनाथ भगवंता ॥१५॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णत्रयोदश्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री धर्मनाथजिनेन्द्रायअर्घ्यं...।

भादों कृष्ण सप्तमी जब हो, तज सर्वार्थसिद्धि को तब तो ।
ऐरा माँ के गर्भ वसंता, जय हो शांतिनाथ भगवंता ॥१६॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण कृष्णा दसमी पाकर, कामदेव चक्री तीर्थंकर।
श्रीमति माँ के गर्भ वसंता, जय हो कुंथुनाथ भगवंता ॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री कुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फाल्गुन शुक्ला तीजा पाके, हस्तिनागपुर सुर से आके।
गर्भ सुमित्रा माँ के वसंता, जय हो अरहनाथ भगवंता ॥१८॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्री अरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अपराजित तज मिथिला आये, चैत्र शुक्ल जब एकम् पाये।
प्रभावती के गर्भ वसंता, जय हो मल्लिनाथ भगवंता ॥१९॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भकल्याणकमण्डित श्री मल्लिनाथजिनेन्द्रायअर्घ्यं...।

श्रावण दूजा कृष्ण महाना, अपराजित का त्याग विमाना।
पद्मा माँ के गर्भ वसंता, जय हो मुनिसुव्रत भगवंता ॥२०॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

आश्विन कृष्ण दूज तिथि पाकर, प्राणत तज आये मिथलापुर।
विपुला माँ के गर्भ वसंता, जय हो नमीनाथ भगवंता ॥२१॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज अपराजित आए द्वारिका, जब हो कार्तिक षष्ठी शुक्ला।
मात शिवा के गर्भ वसंता, जय हो नेमिनाथ भगवंता ॥२२॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री नेमिनाथजिनेन्द्रायअर्घ्यं...।

कृष्ण दूज वैशाख विशाखा, काशि आए तज प्राणत शाखा।
वामा माँ के गर्भ वसंता, जय हो पार्श्वनाथ भगवंता ॥२३॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकमण्डित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

छठ आषाढ़ शुक्ल की बेला, कुण्डलपुर में स्वर्ग सा मेला।
त्रिशला माँ के गर्भ वसंता, जय हो महावीर भगवंता ॥२४॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भकल्याणकमण्डित श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

चौबीसों के हम भजें, सभी गर्भ कल्याण।
करें नमोऽस्तु अर्घ्य ले, हो जग का काल्याण॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

भजें गर्भ कल्याण तो, होते मालामाल।
तीर्थंकर चौबीस की, अतः कहें जयमाला॥

(ज्ञानोदय)

अगर किसी सामान्य जीव ने, देख जगत के कष्टों को।
जिनशासन पर श्रद्धा रखकर, हरना चाहा दुःखों को ॥
करुणा जल आँखों में भरकर, विश्वशांति वह चाहे जो।
अनंत भव जल चुल्लू सा कर, सम्यग्दर्शन पाये वो॥१॥
निज भावों की बढ़ा विशुद्धि, भाय भावना सोलह वो।
तीर्थंकर प्रकृति को बाँधे, जाये स्वर्ग-नरक वह तो॥
गर्भकाल छः मास पूर्व से, इन्द्रादिक शुभ नगर रचें।
अष्टकुमारी छप्पनदेवी, सेवाकर शुचि गर्भ करें॥२॥
पन्द्रह महीने रत्न बरसते, माँ सोलह सपने देखे।
सुबह सभा में राजा से वह, फल पूछे जाने हरखे॥
पुत्र बनेगा प्रभु तीर्थंकर, अतः गर्भ कल्याणक हो।
पुण्यफला है तीन ज्ञानधर, धर्म तीर्थ का नायक हो॥३॥
पर्व गर्भ कल्याणक उत्सव, सचमुच देव मनाते हैं।
हम श्रद्धा से करें महोत्सव, जीवन धन्य बनाते हैं॥
हमें भक्ति से यों लगता ज्यों, हम भी अंतिम गर्भ धरें।
विश्वशांति में योगदान दें, 'सुव्रत' निज की सैर करें॥४॥

(दोहा)

पर्व गर्भ कल्याण के भक्त भजें चौबीस।
कटें गर्भ के दुख सभी, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

जन्मकल्याणक पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

जन्म दिवस का उत्सव करना, पाना पुनः जन्म दुख है।
किन्तु जन्म पा जन्म न पाना, पर्व जन्मकल्याणक है॥
मानव दानव करें पर्व जब, मिले शांति पल भर सबको।
चौबीसों सम हो जन्मोत्सव, सो पूजें जन्मोत्सव को॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(भक्ति बेकरार...)

चौबीसी दरबार है, जन्मों का त्यौहार है।
घर आँगन नगरी दुनियाँ में, हो रही जय जयकार है॥
जन्म लिया पर जन्म न लें अब, अतः जन्म को टारे तुम ।
पर्व जन्म कल्याणक करके, जल जैसे हों प्यारे हम ॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं...।

द्वन्द्वों का संताप हरे सो, बने स्व-पर को शीतल तुम ।
पर्व जन्म कल्याणक करके, चन्दन से हों शीतल हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं...।

पर की आकुलता त्यागी सो, अक्षय सुख को पाये तुम ।
पर्व जन्म कल्याणक करके, अक्षय बनने आये हम ॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतान्...।

जग के सारे खेल त्याग कर, आतम पुष्प खिलाये तुम ।
पर्व जन्म कल्याणक करके, काम हरण को आये हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पाणि...।

जड़ का भोग भोगना तजकर, शुद्धातम को चखते तुम ।
पर्व जन्म कल्याणक करके, निज नैवेद्य चाहते हम ॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं...।

हम अज्ञानी तुम हो ज्ञानी, हम अंधयारे सूरज तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, निज दीपक से चमकें हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं...।

कर्म जीतते सारे जग को, कर्म जयी परमातम तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, धूप चढ़ा हों पावन हम॥
चौबीसी दरबार है, जन्मों का त्यौहार है।
घर आँगन नगरी दुनियाँ में, हो रही जय जयकार है॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं...।

आतम भिन्न भिन्न कर पुद्गल, रत्नत्रय फल पाये तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, मोक्षमहल फल चाहें हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं...।

जन्मोत्सव कर मृत्यु महोत्सव, सो दीपोत्सव पाये तुम।
पर्व जन्म कल्याणक करके, तुम सम अर्घ सजायें हम॥ चौबीसी...

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (दोहा)

नाभिराय के आँगने, जन्म लिये भगवान्।
चैत्र कृष्ण नवमी हुयी, जग में पूज्य महान्॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला दशमी माघ को, जन्मे अजितकुमार।
जितशत्रु के आँगने, जय-जय हो त्यौहार॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, जन्मे शंभवनाथ।
जितारि नृप के आँगने, पर्व किये सुरनाथ॥३॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायांजन्मकल्याणकमण्डित श्रीशंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

माघ शुक्ल बारस जहाँ, जन्मे नन्दननाथ।
पिता स्वयंवर के यहाँ, किए पर्व सुरनाथ॥४॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल ग्यारस लिए, सुमतिनाथ प्रभु जन्म।
पिता मेघरथ के यहाँ, जन्मोत्सव की धूम॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, पद्मोत्सव की धूम।
धरणराज घर जन्म की, बजे बधाई झूम॥६॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस हुई, झूम-झूम विख्यात।
सुप्रतिष्ठ घर आँगने, जन्मे सुपार्श्वनाथ॥७॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किये सुरेश॥८॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

एकम अगहन शुक्ल को, जन्मोत्सव त्यौहार।
राजा श्री सुग्रीव के, आये सुविधिकुमार॥९॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघकृष्ण बारस लिये, शीतल जिनवर जन्म।
राजा दृढरथ भद्रपुर, पर्व करें हो धन्य॥१०॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, प्रभु श्रेयांस अवतार।
विष्णु नृप घर आँगने, हो बधाई त्यौहार॥११॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, पूज्योत्सव घड़ि आई।
राजा श्री वसुपूज्य के, बाजे जन्म बधाई॥१२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौथी शुक्ला माघ में, जन्मे विमल जिनेन्द्र।
कृत वर्मा गृह राज्य में, उत्सव करें सुरेन्द्र॥१३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बारस कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्में बाल अनन्त।
सिंहसेन नृप के यहाँ, बाजे ढोल मृदंग॥१४॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तेरस शुक्ला माघ को, जन्मी धार्मिक साँच।
भानुराज के आँगने, दिल-दिल घोड़ी नाँच॥१५॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शांति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥१६॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रथम शुक्ल वैशाख को, जन्मे कुन्थुजिनेश।
सूर्यसेन के आँगने, बाजे ढोल विशेष॥१७॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस अगहन शुक्ल में, जन्मे अरह अडोल।
पिता सुदर्शन के यहाँ, भक्त बजाएँ ढोल॥१८॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, जन्मे मल्लि जिनंद।
कुम्भराज गृह राज्य में, शोर-बुलौआ-नंद॥१९॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

वैशाख कृष्ण दशमी तिथि, जन्मे सुव्रतनाथ।
सुमित्रनृप के आँगने, सुर नर नाँचे साथ॥२०॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे, नाँचे साथ॥२१॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, हुआ जनम का शोर।
समुद्रविजय के आँगने,नेमि किए किलकोर॥२२॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।
विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥२३॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किये सुरेश॥२४॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्मकल्याणकमण्डित श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

चौबीसों के हम भजें, सभी जन्म कल्याण।
करें नमोऽस्तु अर्घ्य ले, हो जग का कल्याण॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

जन्म लिये पर जन्म से, रहित जन्म कल्याण।
अतः कहें जयमालिका, पाने को निर्वाण॥

(ज्ञानोदय)

पंचेन्द्रिय के विषयों की जब, पूरी आश न कर पाते।
उसको पूरा करने प्राणी, जन्म-मरण करते जाते॥
जन्म बराबर कष्ट नही है, मरण बराबर ना हो भय।
चेतन यों जब चिंतन करते, तभी बनें वे सुखी अभय॥१॥
उसका जन्म भले हो लेकिन, जन्म न अब होगा आगे।
यही जन्म कल्याणक करके, भाग्य सितारे भी जागे॥
जन्मोत्सव में शचि इन्द्राणी, शिशु को गोदी में ले ज्यों।
निज पर्याय धन्य कर लेती, सम्यदर्शन पा ले त्यों॥२॥
दर्श पर्श का हर्ष उसे हो, फिर सौधर्म प्रभु को ले।
मेरु पर जन्माभिषेक कर, करने ताण्डव नृत्य चले॥
मति-श्रुत-अवधि तीन ज्ञान ले, तीर्थंकर प्रभु जन्म धरें।
तत्त्व बोध दे राग-द्वेष हर, हम भक्तों को धन्य करें॥३॥
एक कुटुम का हुआ पुण्य तो, बेटा संस्कारी जन्मे।
जब हो पुण्य देश का तब तो, संत सदाचारी जन्मे॥
तीन लोक का अगर पुण्य हो, तो तीर्थंकर प्रभु जन्में।
'सुव्रत' जन्म सफल करने को, चाहे प्रभु जैसे जन्में॥४॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पर्व जन्म कल्याण के, भक्त भजें चौबीस।
कटें जन्म के दुख सभी, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

तप कल्याणक पूजन

स्थापना (जोगीरासा)

दुर्लभ मानव तन को पाकर, करें तपस्या वीरा।
आदिनाथ से महावीर तक, जिनशासन के हीरा॥
वैरागी ज्यों बने दिगम्बर, नभ अम्बर त्यों गूँजें।
हृदय हमारे आओ प्रभु हम, तप कल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित-श्रीवृषभादिमहावीरपार्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

ले रत्नत्रय की नैया, तुम सम हम बनें तिरैया।
ले नीर नमोऽस्तु गूँजें, हम तप कल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं...।

संबंध दुखों के छोड़े, हम तुम्हें मनाने दौड़े।
ले चन्दन नमोऽस्तु गूँजें, हम तप कल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं...।

रुचि आडम्बर से भागी, मुनि बने दिगम्बर त्यागी।
ले अक्षत नमोऽस्तु गूँजें, हम तप कल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतान्...।

जब याद मुक्ति वधू आई, तब राज वधू न सुहाई।
ले पुष्प नमोऽस्तु गूँजें, हम तप कल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पाणि...।

रख भूखी प्यासी काया, तब आतम का रस पाया।
ले नैवज नमोऽस्तु गूँजें, हम तप कल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं...।

जिन सूर्य चाँद कहलाओ, क्यों भक्त कमल न खिलाओ।
ले दीप नमोऽस्तु गूँजें, हम तप कल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं...।

तुम रूपी कर्म नशाये, निज चिन्मय को महकाये।
ले धूप नमोऽस्तु गूँजें, हम तप कल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं...।

जब ध्यान लगाये साँचे, फल मुक्ति बाग के चाखे।
ले फलम् नमोऽस्तु गूँजें, हम तप कल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं...।

मुनि चरण जहाँ पड़ जाते, वो तीर्थ मोक्ष बन जाते।
ले अर्घ्य नमोऽस्तु गूँजें, हम तप कल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(दोहा)

चैत्र श्याम नवमी दिना, बने दिगम्बर नाथ।
मोह तजा आतम भजा, जिन्हें नमें नत माथ॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शुक्ला नवमी माघ को, तजे अजित दुख धाम।
संत बने अंतरमुखी, सुर-नर करें प्रणाम॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मगशिर शुक्ला पूर्णिमा, राग आग सब छोड़।
पंथ धार निर्ग्रंथ प्रभु, जिन्हें नमन कर जोड़॥३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्लपूर्णिमायां तपकल्याणकमण्डित श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

द्वादश शुक्ला माघ में, बंधन क्रन्दन छोड़।
दीक्षा ले नंदन जिन्हें, वंदन हो सिर मोड़॥४॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवी शुक्ल वैशाख को, तजे अयोध्या धाम।
सुमतिनाथ तप से सजे, हम सब करें प्रणाम॥५॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लनवम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तेरस कार्तिक कृष्ण को, तजे मोह संसार।
बने पद्म प्रभु संत जी, जिन्हें नमन शत बार॥६॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बारस शुक्ला ज्येष्ठ में, तजे-मोह संसार।
प्रभु सुपार्श्व मुनि बन गये, गूँजे जय-जयकार॥७॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥८॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

एकम अगहन शुक्ल को, कर परिग्रह की शाम।
सुविधि तपोत्सव से सजे, जिनको नम्र प्रणाम॥९॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

माघकृष्ण बारस तिथि, तजे राग की वस्तु ।
नग्न सहेतुक में हुये, शीतल मुनि को नमोऽस्तु॥१०॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण को, राजा धर संन्यास।
ग्रन्थ त्याग निर्ग्रंथ बन, जय-जय मुनि श्रेयांस॥११॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस फाल्गुन कृष्ण को, तजे मोह जग वस्तु।
वासुपूज्य मुनि बन गये, सादर जिन्हें नमोस्तु॥१२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपो मङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जन्म तिथि दीक्षा धरे, छोड़े पर-संसार।
श्रमण संत विमलेश को, वंदन बारम्बार॥१३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

उसी जन्म तिथि में हुआ, शुभ दीक्षा कल्याण।
स्वामी संत अनन्त को, बारम्बार प्रणाम॥१४॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जन्मोत्सव की धूम में, लखकर उल्कापात।
धर्मनाथ मुनि बन पुजे, भक्त हुये नत माथ॥१५॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशांति शोर।
शांतिनाथ मुनि को हुई, नमोस्तु चारों ओर॥१६॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जन्म तिथि में चक्र तज, कुन्थुप्रभु तप धार।
जय-जय जिनशासन हुआ, जिन्हें नमन बहु बार॥१७॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी अगहन शुक्ल को, देखे मेघ विनाश।
सन्त अरह प्रभु को नमन, जो धारे संन्यास॥१८॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लदशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चंचल बिजली की चमक, जन्म तिथी में देख।
मल्लिप्रभु दीक्षित हुए, जिन्हें नमन सिर टेक॥१९॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी वदि वैशाख को, परिग्रह का गृह छोड़।
मुनिसुव्रत तप से सजे, सो नमोऽस्तु कर जोड़॥२०॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संत जन्म तिथि में बनें, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रंथी नमिनाथ को, बारम्बार नमोस्तु॥२१॥॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, पशुओं की सुन त्राण।
नेमिप्रभु तप से सजे, हम तो करें प्रणाम॥२२॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रंथ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोऽस्तु जयवंत॥२३॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥२४॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपकल्याणकमण्डित श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

चौबीसों के हम भजें, दीक्षा के कल्याण।
करें नमोऽस्तु अर्घ्य ले, हो जग का कल्याण॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर-तपकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

दीक्षा ले तप से सजे, चौबीसों जिनरूप।
सो जयमाला गुण कहें, पाने नग्न स्वरूप॥

(जोगीरासा)

जय हो! जय हो! नग्न दिगम्बर, ऋषि मुनियों की जय हो।
साधु संत के दर्शन करके, अंतस पाप विलय हो॥
पिछी कमण्डल धारी मुनि का, दर्शन पावन होता।
जिनके दर्शन करके यह भव, चुल्लू भर सा होता॥१॥
धरती अंबर पूर्ण दिगम्बर आते सभी दिगम्बर।
आडम्बर क्यों ओढ़ लिया जब, जाते सभी दिगम्बर॥
इस चिंतन से चौबीसों कुछ, निमित्त पा वैरागे।
लौकांतिक की सुने भावना, सफल परिग्रह त्यागे॥२॥
दीक्षा की जब हुई पारणा, पंचाश्चर्य सुहायें।
तप कल्याणक सभी मनायें, हम भी पुण्य कमायें॥
रत्नत्रय संतान प्राप्त कर, बांझपना निज खोना।
कर पुरुषार्थ दिगम्बर हों हम, नहीं भाग्य से होना॥३॥
जब तक बालक रहे दिगम्बर, उसे लगे माँ प्यारी।
ज्यों जवान होता तो उसको, वधू चाहिए न्यारी॥
जिनवाणी के पुत्र बनें हम, चौबीसों सम होकर।
मुक्तिवधू से करें स्वयंवर, पूर्ण दिगम्बर होकर॥४॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकमण्डित श्रीवृषभादिवीरांत-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

तप कल्याणक से प्रभु, भक्त भजें चौबीस।
जिन साक्षी दीक्षा धरें, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

श्री वृषभसागरजी महामुनिराज की पूजन

स्थापना (दोहा)

पूज्य वृषभसागर बनें, जैसे ही मुनिराज।
करें नमोऽस्तु भक्तजन, हम तो पूजें आज॥

(सखी)

जय पूज्य वृषभसागर जी, मुनिवर को पड़गा कर ही।
पूजा में बोलें स्वाहा, हम करे नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

ओ! भव जल के तैरैया, अब थामो हमरी नैया।
ले जल अब बोलें स्वाहा, हम करें नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

मुनि काया का बस दर्शन, पा परम शांत हो तन मन।
ले चन्दन बोलें स्वाहा, हम करें नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

मुनि मुद्रा अक्षय प्यारी, वह पाने ढोक हमारी।
ले अक्षत बोलें स्वाहा, हम करें नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान्...।

मुनि चरण जहाँ पड़ जाते, वैराग्य पुष्प खिल जाते।
ले पुष्प कहें अब स्वाहा, हम करें नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मुनि त्यागे राज रसोड़े, वह रस चखने सब दौड़े।
नैवेद्य लिये हो स्वाहा, हम करें नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

मुनि दृष्टि जहाँ पर करते, वहाँ ज्ञान के दीपक जलते।
ले दीपक बोलें स्वाहा, हम करें नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्राय मोहांऽधकारविनाशनाय दीपं...।

मुनिवर ज्यों ध्यान लगायें, त्यों कर्म शत्रु घबरायें।
ले धूप कहें अब स्वाहा, हम करें नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बोकर रत्नत्रय फसलें, मुनि मोक्ष फलों के रस लें।
ले फल बोलें अब स्वाहा, हम करें नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं...।

ओ! जिनवाणी के लाला, जब करो मुक्ति वरमाला।
तो हमको नहीं भुलाना, बाराती हमें बनाना॥
मुनि शिवरथ से जायेंगे, हम गजरथ करवायेंगे।
ले अर्घ्य कहें अब स्वाहा, हम करें नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

नग्न दिगम्बर वृषभ मुनि, जग में पूज्य महान।
अतः कहें जयमालिका, करके नमोऽस्तु ध्यान॥

(चौपाई)

जय मुनिराज वृषभसागर जी, त्याग दिए सब जग पाकर भी।
बचपन से था वैभव भारी, राजा बने कुशल अधिकारी॥१॥
मुख्य सुनंदा नंदा रानी, भरत बाहुबली द्वय सुत ज्ञानी।
बेटी ब्राह्मी और सुन्दरी, इत्यादिक सुखमय थी नगरी॥२॥
पूर्व लाख तेरासी बीती, पूर्व लाख इक शेष बची थी।
नीलांजना नृत्य न भाया, बन वैरागी मुनि पद पाया॥३॥
भेदाभेद धरे रत्नत्रय, नभ अम्बर में गूंजे जय-जय।
तप कल्याणक देव मनायें, हम मुनि बनने भाव सजायें॥४॥
अतः लगाया हमने चौका, धन्य किए गुरु देकर मौका।
और एक मौका गुरु देना, नित आहार यहीं पा लेना॥५॥
पंचाश्चर्य अनोखे अब हों, भक्तों के हर काम सुलभ हों।
जब तक मिले ना मुक्ति सजनी, पिछी कमण्डल से हो मँगनी॥६॥
तुम सम हम भी दूल्हे बनकर, मुक्तिवधू से करें स्वयंवर।
सो 'सुव्रत' को पास बुला लो, निज से निज का मिलन करा दो ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभसागरजी महामुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय जयमाला महार्घ्यं...।

(दोहा)

यही भावना भक्त की, मिले धर्म का पंथ।
संत वृषभसागर नमो, बनने को निर्ग्रन्थ॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

ज्ञान कल्याणक पूजन

स्थापना (विष्णु)

पूज्य दिगंबर आत्मध्यान कर, हों केवल ज्ञानी।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, सबके कल्याणी॥
हृदय वेदि पर ध्यान लगाने, आ जाओ ज्ञानी।
पर्व ज्ञान कल्याणक भजने, हो नमोऽस्तु स्वामी॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

रत्नत्रय के आभूषण से, आतम शृंगारें।
स्वस्थ मस्त हों भक्त आप सम, सो आये द्वारे॥
निज दर्शन को प्रासुक जल ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञान कल्याणक को अब, हो नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं...।

केवलज्ञानी तीर्थंकर के, समवसरण लगते।
खुद चैतन्य छाँव में रहकर, जग शीतल करते॥
चारु चरण पाने चंदन ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञान कल्याणक को अब, हो नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं...।

जग ने किसका साथ निभाया, साथ न दे तन धन।
सो सिंहासन कभी न छूते, परमौदारिक तन॥
वीतराग बनने अक्षत ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञान कल्याणक को अब, हो नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतान्...।

आत्म झील में ध्यान शील से, ज्ञान कमल खिलते।
सो कमलासन से चउ अंगुल, प्रभु ऊपर उठते॥
शील झील के पुष्प बनें सो, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञान कल्याणक को अब, हो नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पाणि...।

भोजन बिन कैसे प्रभु जीते, सोचें शंकालु।

संज्ञादिक कुछ दोष न प्रभु में, कहते श्रद्धालु॥
निज रस को नैवेद्य हाथ ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञान कल्याणक को अब, हो नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं...।

केवलज्ञान सूर्य ने हर ली, मोह घटा काली।
मिटी परिग्रह की सब भ्रमणा, पाके दीवाली॥
मोह मिटाने दीप ज्योति ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञान कल्याणक को अब, हो नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं...।

रूपी कर्म अरूपी आतम, भिन्न स्वभाव कहे।
फिर भी जीवों को दुख दे सो, ज्ञानी नशा रहे॥
हरें कर्म आतंक धूप ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञान कल्याणक को अब, हो नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं...।

पाप कर्म फल दुख ही देंगे, पाप करो फिर क्यों।
पुण्य करो तो समवसरण में, पुण्यफला सम हों॥
पाप त्यागने फल गुच्छे ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञान कल्याणक को अब, हो नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं...।

जड़ के इतने वैभव पाकर, तीर्थंकर छोड़ें।
सचमुच जग सम्राट यही हैं, इन्हें हाथ जोडें॥
ज्ञान सम्पदा भजें अर्घ्य ले, हम बोलें स्वाहा।
पर्व ज्ञान कल्याणक को अब, हो नमोऽस्तु आहा॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली (दोहा)

ग्यारस फाल्गुन कृष्ण में, घातिकर्म सब नाश।
बने केवली लोक ये, नम्र हुआ बन दास॥१॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

ग्यारस शुक्ला पौष को, पाकर केवलज्ञान।

अजित बने भगवन अजित, जिन्हें नमन अविराम॥२॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कार्तिक कृष्णा चौथ में, पाकर केवलज्ञान।
श्रावस्ती के लाल को, नमन करें धर ध्यान॥३॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पौष शुक्ल चौदश मिली,निज निधि केवलराज।
जय हो अभिनन्दन विभो, नमन आपको आज॥४॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस शुक्ला चैत्र को, पाये पद अरिहंत।
ज्ञानोत्सव में गूँजती, जय-जय सुमति महंत॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चैत्र शुक्ल पूनम हुई, जग में पूज्य महान्।
घाति नशा प्रभु पद्म ने, पाया केवलज्ञान॥६॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

षष्ठी फाल्गुन कृष्ण में, लोकालोक दिखाए।
सुर-नर नाथ सुपार्श्व को, सादर शीश नवाए॥७॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥८॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कार्तिक शुक्ला दूज को, सुविधि हरे अज्ञान।
समवसरण तब लग गया, जिन्हें नमन अविराम॥९॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौदस कृष्ण पौष में, कर अज्ञान जयोस्तु।
शीतल प्रभु सर्वज्ञ को, करते भक्त नमोऽस्तु॥१०॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कृष्णा माघ अमास को, उपजा केवलज्ञान।
सुन-नर सब मिल पूजते, जय श्रेयांस भगवान्॥११॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण-अमावस्यायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दूज माघ सुदि को प्रभो, घाति कर्म परिहार।
वासुपूज्य तीर्थेश को, नमन अनंतों बार॥१२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

षष्ठी कृष्णा माघ में, पाये केवलज्ञान।
विमलेश्वर अर्हंत को, नमस्कार धर ध्यान॥१३॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कृष्णा चैत्र अमास को, कर्म नशा ये चार।
बने अनन्त अरिहन्त जी, जिन्हें नमोस्तु बहुबार॥१४॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पौष पूर्णिमा को हरे, घाति कर्म संसार।
धर्म संत अर्हन्त को, नमोस्तु बारम्बार॥१५॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शांति अर्हन्त को, करती भक्त समाज॥१६॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चैत्र शुक्ल की तीज में, पा कैवल्य सुवस्तु।
कुन्थुप्रभु अर्हंत को, हम तो करें नमोस्तु॥१७॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

बारस कार्तिक शुक्ल को, हरे घातिया धूल।
अरह केवली को नमन, अर्पित श्रद्धा फूल॥१८॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पौष कृष्ण की दूज में, पाए प्रभु कैवल्य।
मल्लिप्रभु तीर्थेश को, नमन हरे अब शल्य॥१९॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नवी कृष्ण वैशाख को, हर ली संकट रात।
भज चाहें कैवल्य हम, जय मुनिसुव्रत नाथ॥२०॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥२१॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लैकादशम्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

शुक्ला एकम् क्वार को, घाति कर्म जयोस्तु।
मोक्षमार्ग अध्यात्म-दा, नेमि प्रभु को नमोस्तु॥२२॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोऽस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥२३॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण चतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासननायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥२४॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूणार्घ्य

चौबीसों के हम भजें, पूज्य ज्ञानकल्याण।
करें नमोऽस्तु अर्घ्य ले, हो जग का कल्याण॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

ज्ञान ज्ञान बौछार है, करें आत्म प्रक्षाल।
अतः ज्ञानकल्याण की, गायें हम जयमाल॥

(विष्णु)

जय हो! जय हो! ज्ञान पर्व के, चौबीसों स्वामी।
जिनके उत्सव करें देव नर, बन के अनुगामी॥१॥
संत घातिया कर्म घात कर, हों केवलज्ञानी।
तीर्थंकर अरिहंत बने ज्यों, शुद्धातम ध्यानी॥२॥
समवसरण में दिव्य देशना, हो ओंकारमयी।
धर्म तीर्थ का हो संचालन, शुभ कल्याणमयी॥३॥
भरे भव्य जीवों से कोठे, पूजें अर्हंता।
आत्मतीर्थ को पाने निज में, खोजें भगवंता॥४॥
भाग्य भरोसे किसने पाया, मोक्ष मार्ग साँचा।
कौन दिगम्बर संत बना है, किसका यश नाँचा॥५॥
अतः ज्ञान उपदेश यही कि, शुभ पुरुषार्थ करें।
पर्व ज्ञानकल्याणक भजकर, 'सुव्रत' मोक्ष चलें॥६॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकमण्डित श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

ज्ञान विश्व का सार है, ज्ञान मोक्ष का द्वार।
अतः ज्ञानकल्याण भज, करें आत्म उद्धार॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

दिव्यध्वनि अर्घ्य

(जोगीरासा)

समवसरण में तीर्थंकर की, दिव्य देशना होती।
निजानन्द को मुख्य बनाकर, दे रत्नत्रय मोती॥
द्रव्य तत्त्व व धर्म कर्म के, पदार्थ के स्वर गूंजें।
देव शास्त्र गुरु के निमित्त से, अर्घ्य चढ़ा हम पूजें॥
प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं, सूत्र चार अनुयोगी।
द्वादशांग अनेकांत धर्म ही, आतम के सहयोगी॥
धर्म श्रमण-श्रावक का देकर, जुदा करें जड़ चेतन।
हम नमोऽस्तु कर अर्घ्य चढ़ायें, धन्य करें निज जीवन॥

ॐ ह्रीं द्रव्यतत्त्वपदार्थ-चउअनुयोग-अनेकांत-द्वांदशांगस्वरूप-धर्मोपदेशकजिनाय अर्घ्यं...।

विहार निवेदन

धर्म भेद विज्ञान समझकर, इन्द्र करे प्रभु सेवा।
दिव्य अर्चना करके कहता, हे! देवों के देवा॥
भव्य भूमि पर विहार की अब, बरसाओ प्रभु धारा।
सो रत्नत्रय की खेती कर, मिले मोक्ष फल प्यारा॥

(दोहा)

समवसरण तजकर किये, प्रभु जी जहाँ विहार।
उस भूमि को नमोऽस्तु कर, करें आत्म उपकार॥

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते-भगवते-विहारावस्थाप्राप्त-जिनाय अर्घ्यं...।

समवसरण वंदना अर्घ्य

इस विधि जिन नव देवता, जग के पालनहार।
जिन्हें नमोऽस्तु अर्घ्य ले, हम करते जयकार॥

ॐ ह्रीं जिनदेव-गुरुश्रुतादि-सकल-नवदेवताभ्यो अर्घ्यं...।

मोक्ष कल्याणक पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

केवलज्ञानी समवसरण तज, ज्यों हि योग निरोध करें।
तीजा शुक्ल ध्यान करके भव, पाँच लघुस्वर योग्य करें॥
चौथा करके हरें कर्म सो, मोक्ष में न अब देरी हो।
मना मोक्ष कल्याणक अब तो, निज गजरथ की फेरी हो॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमंडित-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(चौपाई)

सिद्धों सम समकित सावन हों, हम श्रद्धा जल से पावन हों।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं...।

ज्ञान महल के ओ निर्माता, दो ज्ञानी चंदन सा छाता।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं...।

दे दो दर्शन सिद्ध जिनंदा, हम पायें अक्षय आनंदा।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतान्...।

वीर्यसैन्य ले काम नशाये, शील झील के पुष्प खिलाये।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पाणि...।

सूक्ष्म स्वरूपी सिद्ध रसोई, चखें हमारी इच्छा होई।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं...।

अवगाहन की पायी गलियाँ, भक्तों को दो दीपावलियाँ।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं...।

अव्याबाध न देते बाधा, फल का फल श्रद्धा से ज्यादा।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं...।

श्रद्धालु को नहीं भुलाना, सिद्ध शहर में शीघ्र घुमाना।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं...।

मोक्ष आठ गुणमय सिद्धों का, अर्घ्य आठ गुणमय द्रव्यों का।
अतः णमो सिद्धाणं गूँजें, पर्व मोक्षकल्याणक पूजें॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणमंडित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(दोहा)

माघ कृष्ण चौदश दिना, हरे कर्म का भार।
हिमगिरि से शिवपुर गये, हम पाये त्यौहार॥१॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शुक्ल पंचमी चैत्र को, मधुवन से कर ध्यान।
गये अजितप्रभु मोक्ष को, जिन को नम्र प्रणाम॥२॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल पञ्चम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चैत्र शुक्ल छठ को प्रभु, पाये मोक्ष महीश।
धवलकूट सम्मेदगिरि, को वन्दन नत शीश॥३॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

छठी शुक्ल वैशाख को, गये मोक्ष के धाम।
नंदनप्रभु गिरिराज को, बारम्बार प्रणाम॥४॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल एकादशी, मोक्ष महोत्सव सार।
भक्त सुमतिप्रभु को, करें नमन अनन्तों बार॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल-एकादश्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौथ कृष्ण फागुन हुई, पद्मप्रभु के नाम।
मोक्ष गये सम्मेद से, लाखों जिन्हें प्रणाम॥६॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सातें फागुन कृष्ण में, प्रभु सुपार्श्व गए मोक्ष।
गिरिवर प्रभास कूटमय, हम तो देते धोक॥७॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सम्मेदाचल से गये, चन्द्र मोक्ष के धाम।
सातें फागुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥८॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमंडित श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भाद्र अष्टमी शुक्ल को, सुविधि बने सिद्धीश।
मुक्त हुए सम्मेद से, जिन्हें झुकायें शीश॥९॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डित श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अश्विन शुक्ला अष्टमी, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गये सम्मेद से, नमोऽस्तु शीतलनाथ॥१०॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूनम श्रावण शुक्ल को, सम्मेदशिखर के धाम।
मोक्ष गये श्रेयांस प्रभु, सादर जिन्हें प्रणाम॥११॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भाद्र शुक्ल दस लक्षणी, अनंत चौदस साथ।
चंपापुर से पूज्य प्रभु, मुक्त जिन्हें नत माथ॥१२॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आठें कृष्ण अषाढ़ को, विमल प्रभु को मोक्ष।
सम्मेदाचल से हुआ, जिनको सादर धोक॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्ण-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

उसी ज्ञान तिथि में गये, मोक्ष, अनन्त ऋषीश।
सम्मेदाचल को नमन, मिले अनन्ताशीष॥१४॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल को, मोक्ष धर्म प्रभु पाए।
सुदत्त कूट शाश्वत गिरि, जिनको शीश नवाए॥१५॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वंदन नत शीश॥१६॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शिखर ज्ञानधरकूट से, मोक्ष कुन्थुप्रभु पाए।
मोक्ष जन्म तप साथ में, हम तो शीश नवाए॥१७॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत अमावस कृष्ण में, मोक्ष लिए प्रभु लूट।
नमन करें अरनाथ को, पूजें नाटककूट॥१८॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पाँचे फागुन शुक्ल में, मोक्ष मल्लिप्रभु पाए।
शाश्वत संबलकूट को, हम तो शीश झुकाए॥१९॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपञ्चम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फागुन द्वादश कृष्ण को, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गये सम्मेद से, नमोऽस्तु सुव्रतनाथ॥२०॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥२१॥॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आठें (सातें) शुक्ल अषाढ़ को, प्राप्त किए निर्वाण।
नेमिप्रभु, गिरनार को, बारम्बार प्रणाम॥२२॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ल-अष्टम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोऽस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥२३॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिये दिवाली पर्व॥२४॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षकल्याणकमण्डित श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

चौबीसों के हम भजें, पूज्य मोक्ष कल्याण।
करें नमोऽस्तु अर्घ्य ले, हो जग का कल्याण

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

चिदानंद चिद्रूप हैं, वीतराग विज्ञान।
निष्कलंक सिद्धेश को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(चौपाई)

जय हो! जय हो! सिद्ध जिनातम, चिदानंद चैतन्य चिदातम।
मुमुक्ष जन के लक्ष्य प्रयोजन, सो नमोऽस्तु हम करते भगवन॥१॥
जिनशासन जब तुम्हें सुहाया, तब तुमने इक स्वप्न सजाया।
मोक्षमार्ग पर चलना हमको, सिद्ध स्वरूपी बनना हमको॥२॥
पूरे करने ऐसे सपने, त्याग दिये जो ना थे अपने।
देव-शास्त्र-गुरु पहले पूजे, पंचलब्धि के स्वर तब गूंजे॥३॥
तब सम्यदर्शन को पाकर, किया अनंत भव जल चुल्लु भर।
सम्यग्ज्ञान करण्डक चमके, द्रव्य तत्त्व पदार्थ सब समझे॥४॥
फिर तीर्थंकर प्रकृति बाँधी, पर की आसक्ती सब त्यागी।
बने दिगम्बर संत महंता, जगत पूज्य अर्हंत अनंता॥५॥
फिर जड़ के संबंध नशाये, सर्वोत्तम प्रभु सिद्ध कहाये।
नहीं पादुका अंजन सिद्धा, नहीं दिग्विजय गुटिका सिद्धा॥६॥
जग में जितने सिद्ध प्रसिद्धा, उनसे आप विलक्षण सिद्धा।
मुख्य रूप से आठ गुणी हो, तथा अमूर्तिक नंत गुणी हो॥७॥
लोक शिखर पर जाकर टिकते, चरम चक्षुओं से न दिखते।
चाहे लोक किसी के वश हो, चाहे दुनियाँ तहस नहस हो॥८॥
चाहे संकट की बारिश हो, किन्तु सिद्ध न टस से मस हो।
पूज्य सिद्ध पद जो भी ध्याये, वो भी सिद्ध परम पद पाये॥९॥
अतः मोक्ष कल्याणक पूजें, जय हो! जय हो! के स्वर गूँजें।
'सुव्रतसागर' करें नमोऽस्तु, सिद्ध सिद्ध की दे दो वस्तु॥१०॥

(दोहा)

वृषभादिक वीरान्त जिन, परम सिद्ध चौबीस।
सिद्ध भक्ति कर सिद्ध हों, सो नमोऽस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकमण्डित-वर्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पर्व प्रतिष्ठा यज्ञ कर, पूर्णाहूति होम।
नमोऽस्तु कर 'सुव्रत' बनें, सिद्ध स्वरूपी ओम्॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

पृथ्वीपुर में होएगा, पूज्य पंचकल्याण।
पूर्व सात दिन में लिखे, यह वा याग विधान॥१॥
शांतिनाथ भगवान के, पर्व जन्म तप मोक्ष।
चढ़ा लाडु निर्वाण का, चाहें आतम सौख्य॥२॥
दो हजार सत्रह मई, बुध चौबिस तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥३॥

॥ इति शुभं भूयात्...॥

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिंब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित- अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्र-

षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शांति दें, करें विश्व कल्याण॥

(जल धारा...)

अपने उर में बह उठे, विश्व शांति की धार।
कर्मों के ग्रह शांति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(चंदन धारा...)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रंथ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शांति आत्म शांति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

श्री जिनवर की आशिका,लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप)

॥इति शुभम्॥

आरती

मैं तो आरती उतारूँ रे, पाँचों कल्याणक की-२
जय-जय तीर्थंकर प्रभु, जय-जय-जय-२॥

१. गर्भ कल्याणक है मनुहार - प्रतिष्ठा महोत्सव में,
माँ के सोलह सपने मजेदार - प्रतिष्ठा महोत्सव में।
रत्नवृष्टि है सुखकार - प्रतिष्ठा महोत्सव में,
देवी सेवा है महा चमत्कार - प्रतिष्ठा महोत्सव में॥
नृत्य करूँ झूम-झूम, झम-झमाझम झूम-झूम-२,
हो प्रभु को निहारूँ रे...। मैं तो....

२. जन्म कल्याणक है त्यौहार - प्रतिष्ठा महोत्सव में,
शचि का करना प्रभु से दुलार - प्रतिष्ठा महोत्सव में।
ऐरावत पर प्रभु का विहार - प्रतिष्ठा महोत्सव में,
मेरु पर न्यह्वन शृंगार - प्रतिष्ठा महोत्सव में॥
इंद्र खूब नाँच करे, ताण्डव सा नृत्य करे-२,
हो प्रभु को निनिहारूँ रे...। मैं तो...

३. तपो कल्याणक है वैराग्य - प्रतिष्ठा महोत्सव में,
राज पाठ प्रभु का करना त्याग - प्रतिष्ठा महोत्सव में।
पालकी से करना वन विहार - प्रतिष्ठा महोत्सव में,
लौंच करना परिग्रह का त्याग - प्रतिष्ठा महोत्सव में॥
जिन रूप भाये खूब, भक्ति में झूम-झूम-२,
हो रोज करके नमोऽस्तु रे...। मैं तो...

४. ज्ञान कल्याणक ज्ञान बौछार - प्रतिष्ठा महोत्सव में,
समवसरण लगना ज्ञान भंडार - प्रतिष्ठा महोत्सव में।
दिव्यध्वनि का खिरना बहार - प्रतिष्ठा महोत्सव में,
केवलज्ञानी का करना विहार - प्रतिष्ठा महोत्सव में॥
दीप धरूँ धूप धरूँ, दिव्य द्रव्य अर्घ्य धरूँ,-२
प्रभु पूजा कराऊँ रे...। मैं तो...

५. मोक्ष कल्याणक प्रभु का नियोग - प्रतिष्ठा महोत्सव में,
भक्त पाते प्रभु का वियोग - प्रतिष्ठा महोत्सव में।
इन्द्र करे अंतिम संस्कार - प्रतिष्ठा महोत्सव में,
भक्त करे गजरथ विहार - प्रतिष्ठा महोत्सव में॥
भक्ति करूँ नृत्य करूँ, मन में उत्साह भरूँ-२,
प्रभु को पा जाऊँ रे...। मैं तो...